गुंजन चावला

बी.ए. हिंदी ऑनर्स

HIN/18/4

तीसरा सैमेस्टर

प्रस्तावना

- आज का युग वाणिज्य-व्यापार का युग है। उत्पादक अपने उत्पाद की उपभोक्ताओं तक पहुँचाने के लिए प्रचार माध्यमों का सहारा लेकर चलते हैं। किसी व्यवसाय की उन्नति के लिए प्रचार का महत्व अधिक होता है क्योंकि इसी से ही उपभोक्ता को वस्तु के विषय में जानकारी प्राप्त हो पाती है। यह प्रचार सामाग्री विज्ञापन के रूप मे होती है।
- कोई भी वाणिज्य-व्यापार विज्ञापन रूपी प्रचार से उन्नत होता है। वाणिज्य-व्यापार के क्षेत्र मे विज्ञापन का सहारा लेकर उपभोक्ताओं का विज्ञापित उत्पाद की ओर ध्यान आकर्षित किया जाता है ताकि वे उसे खरीदने के लिए प्रेरित हों। विज्ञापन एक वह सशक्त माध्यम है जो उपभोक्ताओं को जानकारी एवं सूचना प्रदान करके उनकी मानसिक सोच एवं विवेक को चकाचौंध कर उत्पादित वस्तु को परखने एवं उपयोग-उपभोग करने

के लिए लालायित करता है। यही कारण है कि आज विज्ञापन हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। इसलिए यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि आज का युग विज्ञापन का युग है और विज्ञापन की अवधारणा एक विधा का रूप ले चुकी है।

- विज्ञापन उत्पादक का उत्पाद ने होकर उसके विपणन और वितरण का माध्यम है। विज्ञापन में यह महत्वपूर्ण नहीं कि उसमें व्यक्त विचार। सूचना अथवा तथ्य किस हद तक सही है।

अवधारणा॥ (विज्ञापन)

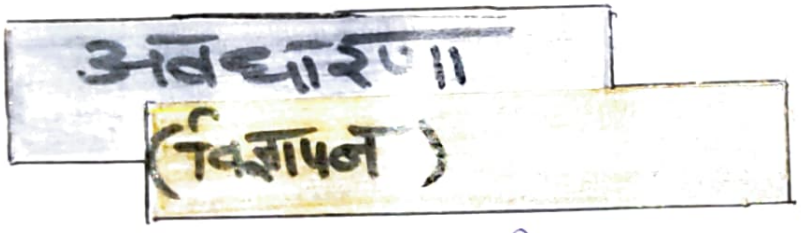

- सामान्य रूप में विज्ञापन को जनसंचार का माध्यम माना जाता है। विज्ञापन को वस्तु अथवा विचार को जनमानस तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम भी कहा जा सकता है। प्राचीन काल में विज्ञापन का क्षेत्र सीमित था। विज्ञापन का उपयोग शासकों द्वारा जनता तक अपनी खबरें को

पहुँचाने के लिए किया जाता था। उसके तरीके भी भिन्न थे। मुनादी अथवा इश्तहार को विज्ञापन के रूप में प्रचलित थे। तदुपरान्त दीवारों पर लिखकर विज्ञापन दिए जाने लगे। जैसे - जैसे मनुष्य की आवश्यकताएं बढ़ने लगी वैसे - वैसे विज्ञापनों दिए जानेलगे। जैसे - जैसे मनुष्य की आवश्यकताएं बढ़ने लगी वैसे - वैसे विज्ञापनों की प्रचुरता भी बढ़ने लगी।

- विज्ञापन अब मात्र जनसंचार का माध्यम बन कर नहीं रह गया है। अपितु वह जीविका का साधन भी हुआ है। साथ ही वर्तमान तकनीकि युग में विज्ञापन का प्रचलन बढ़ा है। या यह कहा जाए कि वर्तमान तकनीकि युग विज्ञापन का युग है तो अतिशयोक्ति न होगी। आज प्रिंट मीडिया हो या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया सभी में विज्ञापनों की भरमार है। विज्ञापनों के माध्यम से मानवीय जीवन की हर उपयोगी

वस्तु के संबंध में उसके गुणों एवं अवगुणों के बारे में जानकारी आसानी से मिल सकती है। घर के अन्दर टेलीविजन या समाचार पत्रों, इंटरनेट, बाजार में पोस्टरों और होर्डिंग, रेल यात्रा बस यात्रा या हवाई यात्रा हर जगह विज्ञापन दिखाई देते हैं। मानवीय जीवन चाहे वह उपभोक्ता के रूप में हो या निर्माता के रूप में विज्ञापन के बिना अधूरा है। विज्ञापन एक ओर उपभोक्ता को बिना अधिक परिश्रम किए उपयोगी वस्तुओं के बारे में सटीक जानकारी देने में मदद करता है। वहीं दूसरी ओर निर्माता को भी उसकी कुछ लागत पर वस्तु को उपभोक्ता तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध होता है।

- सामाजिक स्वरूप में - विज्ञापनों के माध्यम से चेतना का विकास हुआ है।

लोकतांत्रिक स्वरूप में भी विज्ञापनों की भूमिका बढ़ी है। चुनाव के समय राजनीतिक दल अपने अपने पक्ष में जनता को रिझाने के लिए विज्ञापनों का सहारा लेते हैं और शासन में आने के बाद सरकारी विज्ञापनों के माध्यम से जनहित में जारी योजनाओं एवं नीतियों को जनता तक पहुँचाने में सफल हो रहे हैं तथा जनता भी सरकार द्वारा प्रदत्त सुविधाओं की जानकारी विज्ञापनों के माध्यम से प्राप्त करती है।

- अतः यह कहा जा सकता है कि विज्ञापन मानवीय जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान बना चुका है।

- विज्ञापनों के माध्यम से नशाबन्दी, दहेज प्रथा, महिलाओं के साथ होने वाले अभद्र व्यवहार एवं अनेक सामाजिक कुरीतियों को उजागर किया जा रहा है। उदाहरण के लिए शराब की हर बोतल पर वैधानिक चेतावनी- शराब स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। लिखा होता है जिससे समाज में शराब के उपयोग को कम किया जा सके। इसी प्रकार सिगरेट तथा तम्बाकू इत्यादि के उपयोग पर पाबंदी लगाने के लिए इसके प्रत्येक उत्पाद पर लिखा होता है।

- समाचार पत्र हो या पत्रिकाएं, दूरदर्शन हो या आकाशवाणी, इश्तहार हो या दीवारों पर लिखे जाने वाले विज्ञापन सभी जगह विज्ञापनों के अश्लील स्वरूप ने मानव जीवन को नारकीय बना दिया है।

विज्ञापन की परिभाषा

- विज्ञापन शब्द में दो शब्दों 'विज्ञापन का योग है। इस तरह यह ज्ञापन शब्द में 'वि' उपसर्ग लगाने से बना शब्द है। उपसर्ग 'वि' 'विशेष अर्थ को व्यक्त करता है और ज्ञापन शब्द सूचना या ज्ञान के अर्थ को। इस प्रकार विज्ञापन से मिलकर बने विज्ञापन शब्द का सामान्य अर्थ है - किसी वस्तु अथवा तथ्य की विशेष जानकारी अथवा सूचना देना यह अंग्रेजी के Advertisement शब्द का हिंदी समतुल्य है।
- इस प्रकार विज्ञापन शब्द हो या फिर इन शब्दों का सीधा अर्थ है - किसी वस्तु विशेष आदि की जानकारी देते हुए अथवा उसके बारे में सूचित करते हुए लोगों को अपनी ओर आकर्षित करना।
- विज्ञापन द्वारा लोगों को आकर्षित करने का यह कार्य किसी भी विषय अथवा उत्पादन अथवा सेवा आदि के संदर्भ में किया जाता है।

किंतु यह कार्य अपने आप नहीं हो सकता।
• इसके लिए विभिन्न प्रकार के जनसंचार माध्यमों में से किसी न किसी माध्यम को जरिया बनाया जाता है। इनके जरिए विशेष प्रकार की सूचनाएँ दी जाती हैं ताकि लक्षित उपभोक्ता वर्ग इस संबंध में चिंतन-मनन करे और विज्ञापनकर्ता की इच्छा के अनुसार विचार सहमति, कार्य अथवा व्यवहार करने के लिए मानसिक रूप से बाध्य और विचार-परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम है। अगर विज्ञापन शब्द को परिभाषित करना हो तो यह कहा जा सकता है कि लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए जनसंचार माध्यमों के जरिए किसी भी वस्तु अथवा उत्पादन अथवा सेवा आदि का प्रचार विज्ञापन कहलाता है।

वस्तु से परिचय कराना, उसके प्रति ध्यानाकर्षित करना, रुचि उत्पन्न करना, उसमें

चूँकि विज्ञापन विक्रय कला का एक महत्वपूर्ण एंव अनिवार्य तत्व है इसलिए विज्ञापन शब्द को अपने व्यापक अर्थ में माध्यम के रूप में प्रयोग किया जाता है। विज्ञापन माध्यम के रूप में विज्ञापन आज प्रचार माध्यम का सशक्त उपकरण बन चुका है।
वैसे यहाँ भी विचार करने की बात है कि क्या प्रचार और विज्ञापन एक ही अर्थ को व्यक्त करते हैं या दोनों में कोई भिन्नता है।

[redacted]

हालाँकि यह कहा जाता है कि विज्ञापनों पर भारी व्यय के कारण उत्पाद अथवा सेवा की लागत बढ़ जाती है और साथ ही एकाधिकारी प्रवृत्ति का बढ़ना भी हो जाता है

इसके अलावा, यह भी कहा जाता है कि विज्ञापन भौतिकवाद को बढ़ावा देते हैं। सामाजिक दुष्प्रभावों एवं सांस्कृतिक दोषों के संदर्भ में भी विज्ञापनों की आलोचना की जाती है। इसके अलावा यह भी माना जाता है कि आज के विज्ञापन लोगों को आश्वासन एवं प्रलोभनों देने वाले अधिक होते हैं और उनमें ग्लैमर की काल्पनिक उड़ानें ही अधिक होती हैं।

→ समाज का प्रबुद्ध वर्ग इनके जरिए जानकारी तो प्राप्त करता किंतु इस प्रकार के आश्वासन प्रलोभन से ऊपर उठकर अपने विवेक से

से खरीदारी करने की कोशिश भी करता है लेकिन अर्ध-शिक्षित समाज लोक में ही खरीदारी करने वाले खरीदार तथा प्रौढ़ समझ विहीन अथवा अनुभवहीन बच्चे विज्ञापनों से अपेक्षाकृत अधिक प्रभावित होते हैं।

→ इस प्रकार की कतिपय आलोचनाएँ और नकारात्मक पक्ष विज्ञापनों के महत्त्व पर प्रश्न चिन्ह लगाते हैं। ऐसे में प्रश्न यह उभरता है कि क्या विज्ञापनों का कोई सार्थक महत्त्व है?

→ विज्ञापनों का व्यावसायिक - सामाजिक और आर्थिक जीवन में विशेष महत्त्व है। हमारा समूचा जीवन विज्ञापनों में घिरा हुआ है। विज्ञापन हमारे जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वैवाहिक मसला हो या फिर मकान आदि की खरीद - फरोख्त, नौकर की नियुक्ति हो

या नौकरी चाहिए खोया पाया, नाम परिवर्तन जन्मदिन आदि की शुभकामनाएँ, मृत्यु समाचार या शोक संवेदना आदि किसी भी प्रकार के कार्य में विज्ञापन की सेवा ली जाती है। वास्तविकता यह है कि विज्ञापन हमारे जीवन शैली कार्य शैली, रहन-सहन, खानपान को ही नहीं, हमारी मानसिकता एक को भी प्रभावित कर रहे हैं।

→ व्यावसायिक एवं औद्योगिक क्षेत्रों में किसी भी उत्पाद की माँग पैदा करने और वृद्धि करने, नवीन उत्पाद के विषय में संक्षिप्त शब्दों में उपभोक्ता को जानकारी देकर उनकी अभिरुचि जगाने, विक्रय वृद्धि करने एवं प्रतिष्ठान विशेष के प्रति उपभोक्ताओं में विश्वसनीयता पैदा करने की दृष्टि से आज विज्ञापन का विशेष महत्त्व है। विज्ञापन विपणन-समृद्धि का सशक्त माध्यम है।

→ विज्ञापन उत्पादक को अपना बाजार फैलाने में सहायता प्रदान करता है। यह न केवल नया बाजार खोजने में सहायक होता है बल्कि पुराने बाजार को बनाए रखने में भी मदद करता है। विज्ञापन के माध्यम से निर्माता अपनी उत्पादन की सुदूर क्षेत्र में बैठे उपभोक्ता तक आसानी से पहुँचा सकता है। आज बाजार में

→ विभिन्न उत्पादनों को लेकर प्रतियोगिता का दौर है। एक ही प्रकार की अनेक वस्तुएं उत्पादकों द्वारा निर्मित की जा रही हैं और प्रत्येक उत्पादक अपनी उत्पादन को सबसे अधिक उपयोगी व सस्ता बताने का प्रयास करता है। अतः प्रभावी विज्ञापन के माध्यम से

→ इस प्रतियोगिता के दौर में न केवल उपभोक्ता तक पहुँचने में सहायता मिलती है बल्कि विशेष विज्ञापन उत्पादन की प्रतियोगिता में बनाए रखता है।

→ विज्ञापन के माध्यम से निर्माता और उपभोक्ता से सीधे संबंध स्थापित होने के कारण एक ओर बिचौलियों के प्रभाव में कमी आती है तो दूसरी ओर वस्तुओं की कीमत में कमी होती है जिसका लाभ सीधे उपभोक्ता को मिलता है।

→ विज्ञापन के माध्यम से निर्माता और उपभोक्ता से सीधे संबंध स्थापित होने के कारण एक ओर बिचौलियों के प्रभाव में कमी आती है तो दूसरी ओर वस्तुओं की कीमत में कमी होती है जिसका लाभ सीधे उपभोक्ता को मिलता है।

→ उत्पादन में सुधार - बाजार में विभिन्न प्रकार की वस्तुओं की विभिन्न नामों से विज्ञापित किया जाता है। एक प्रतिष्ठित वस्तु उपभोक्ता के समक्ष अपनी श्रेष्ठता सुनिश्चित करने का प्रयास करता है,

→ विज्ञापन अनेक प्रकार के रोजगार सृजित करता है और पेंटर, फोटोग्राफर, गायक, कार्टूनिस्ट संगीतकार, मॉडल और विभिन्न प्रकार की विज्ञापन करने वाली संस्थाओं में नौकरी के अवसर प्रदान करते हैं।

→ विज्ञापन को रंग योजना, महिलाओं के भड़कीले चित्र शब्द योजना, अश्लील चित्रों का प्रयोग, आकर्षक शैली इससे उपभोक्ताओं का मनोरंजन भी होता है। फिल्मों के प्रचार - प्रसार में विज्ञापन का अत्याधिक प्रयोग किया जाता है।

सारांश

इस कथन को पढ़कर हम यह जानेंगे कि आज आधुनिकीकरण के युग में जीवन की एक आवश्यकता बन चुके विज्ञापन का क्षेत्र रोज़गार का एक प्रमुख क्षेत्र है।

कम से कम शब्दों में प्रभाव डालने वाले ये नारे के तौर असर धारण करने में यह सफल नहीं होते तो निरर्थक हैं।

विज्ञापन, उत्पादक द्वारा उत्पादित वस्तु अथवा सेवा के प्रति आकर्षित करने वाला व्याख्या सूत्र है।

विज्ञापन की अवधारणा समझते हुए हमने उसके महत्व को भी समझा।

****